शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 जुलाई 2017
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

निमाड़ी लोकगीतों में परम्परा और संस्कृति

ज्योति कानुड़े(शोधार्थी)
डॉ.मनीषा शर्मा (निर्देशक)
भाषा अध्ययनशाला
देवी अहिल्या विश्वविद्यालय
इंदौर, मध्यप्रदेश, भारत

शोध संक्षेप

निमाड़ी लोक साहित्य में लोकगीतों का भंडार है। अनगिनत मौखिक एवं मौलिक रूप से पाये जाने वाले असंख्य लोकगीतों का वाचिक परम्परा में सर्वोच्च और महत्वपूर्ण स्थान है। निमाड़ी लोकगीत निमाड़ी लोक संस्कृति के समग्र संवाहक है। निमाड़ी लोक गीत निमाड़ की लोक संस्कृति के परिचालक हैं। निमाड़ की लोक संस्कृति में विविध संस्कारों के निमाड़ी लोक गीत प्रचलित है। हर अवसर पर जन्म से मृत्यु तक के हर कार्य आयोजन पर लोकगीत गाये जाते है जो निमाड़ की संस्कृति, रीति रिवाज को बताते हैं। निमाड़ी लोक साहित्य में लोक गीत निमाड़ के जन-जीवन की उल्लासमय अभिव्यक्ति करते हैं। लोक गीतों से निमाड़ का जनजीवन आनन्दमय बना जाता है। लोक संस्कृति परम्परा के विकास में लोकगीतो का अमूल्य योगदान है। लोकगीतों में निमाड़ के ग्रामीण समाज का प्रतिबिम्ब देखा जा सकता है। निमाड़ी लोकगीतों में ग्राम्य जीवन का जीवंत चित्र प्राप्त होता है। लोकगीत निमाड़ी संस्कृति का अभिन्न अंग है। प्रस्तुत शोध पत्र में निमाड़ी लोकगीतों की जानकारी दी गयी है।

प्रस्तावना

आदिम युग से चली आ रही लोकगीतों की अजस्त्र लोकधारा में कितनी ही संस्कृतियों के सभी तेजस्वी तत्व मौजूद है, जो मनुष्य को परम्परा से बेहतर बनाने में समर्थ हैं। लोकगीतों में भारतीय संस्कृति की धडकनें समाई हैं। लोकगीत समय और शब्द के सबसे महत्वपूर्ण दस्तावेज है, जिनमें जातीय स्मृतियों के ऐतिहास चिन्ह सुरक्षित और संरक्षित है। डॉ. श्याम परमार ने लिखा है- "गीतों की यह परम्परा तब तक जीवित है, जब तक मानव का अस्तित्व विद्यमान है। यदि मानव के कण्ठ से जो विगत भाव कभी निकले थे, कालान्तर में वे गीत बन गये।" आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने लोकगीतों को वेद की संज्ञा दी है।

लोकगीत लोक की पारम्परिक छोटी-छोटी कवितायें है, जिनमें जीवन के समस्त सुख-सौन्दर्य, हास-उल्लास, दुःख तनाव प्रतिबिम्बत होते है। लोक काव्य की यह जीवन धारा लोक के सांस्कृतिक जीवन में निरन्तर बहती है। लोक समाज में प्रचलित विभिन्न संस्कार, अनुष्ठान और रीतिरिवाज लोककविता की अभिव्यक्ति के अवसर है। जन्म, विवाह द्वार गमन आदि मांगलिक अवसरों के गीत, गाथाएँ या ऋतु, पर्व, त्यौहारों के गीतों के रूप में लोक काव्य की उपस्थिति मूलतः परम्परागत है। लोकगीत संस्कृति के संवाहक है। लोकगीतों में संस्कृति के समस्त संवेदी स्वर मौजूद होते हैं। लोकगीत किसी जाति, समूह और देश की लोक संस्कृतियों के परिचायक होते है। उनमें जीवन की प्रत्येक

गतिविधियों का एहसास देखा जा सकता है। मनुष्य के जन्म-मरण, मंगनी-विवाह, जनेउ-मुंडन, पर्व-त्यौहार, हर्ष-उल्लास, हास-परिहास, सुख-दुख आचार-विचार, लोक-व्यवहार, प्रथाएं, रीति- रिवाज, परम्परा-प्रथा, रूढ़ियाँ, धर्म-कर्म, अध्यात्म और अनुष्ठान, अतीत तथा और वर्तमान के सारे संस्कार लोक गीतों में सहज रूप में मिलते है।

लोकगीत लोककण्ठों की धरोहर है। एक कंठ से दूसरे कंठ, एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पंहुचने वाले लोकप्रिय शब्द और स्वर के दोहराव से संचरित होते हैं। दोहराव लोकगीतों का दोष नहीं, गुण है, उसकी शक्ति है, जिसके कारण नयी पीढ़ी सरलता से अपनी स्मृति में गीतों और उनके अर्थ ग्रहण करने में सक्षम होती है।

निमाड़ी लोकगीतों में परम्परा और संस्कृति

निमाड़ अंचल में विभिन्न प्रकार की लोक काव्य चेतना पायी जाती है। निमाड़ी मध्यप्रदेश की एक प्रमुख बोली है। निमाड़ी राजस्थानी, गुजराती के साथ मराठी शब्द सम्पदा की सम्पृक्ति में सम्पूर्ण बोली के रूप में प्रचलित है, जिसकी अपनी समग्र लोक संस्कृति की पृथक प्रतिष्ठा भी है। निमाड़ी ने विन्ध्य और सतपुड़ा के मध्य बहती नर्मदा और तपती काली मिट्टी के कारण खड़ी बोली की संज्ञा धारण कर ली है। निमाड़ी लोकगीत गरम जलवायु के उष्म गीत है। निमाड़ी के अनाम लोकगीतकार जीवन के उन समस्त तेजस तत्वों को समाहित करने में सफल हुए है, जिनमें लोक चेतना के सारे मंत्र और मिथक अक्षुण्ण है। निमाड़ के सांस्कृतिक लोक जीवन में लोकगीत की संख्या सबसे अधिक है। विशेषकर संस्कारों के समय पर लोकगीत सबसे अधिक गाये जाते हैं। जिनकी अपनी पारम्परिक लोक धुन और लोक संगीत है। लोकगीतों की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि उनका रचनाकार कोई अकेला व्यक्ति नहीं होता, बल्कि समूह होता है, इसीलिए इन गीतों समूचे समाज के सुख और दुःख की अभिव्यक्ति सहज मिल जाती है। निमाड़ी लोक गीत या लोक कविता कठिन जीवन की तपस्या और संघर्ष की खरी अभिव्यक्ति है।

जन्म, विवाह, मृत्यु, त्यौहार, देवता, यात्रा अन्य संस्कार के लोकगीतों में निमाड़ की समूची लोक संस्कृति का समावेश हुआ है। जिनके लोकगीतों में लोक कविता कथा-नाट्यों, कथा-वार्ताओं आदि में लोकगीतों की समृद्ध पम्परा दिखाई देती है। निमाड़ की पारम्परिक लोक विधाओं कलगी, तुरी, काठी, मसाण्या गीत, गम्मत लोरी, बारामासा, पर्व-त्यौहार आदि से संबंधित लोकगीत निमाड़ी संस्कृति के परिचायक है। निमाड़ी लोकगीत निमाड़ी लोक संस्कृति की सारभूत और रसमयी आख्यायें हैं।

निमाड़ी लोक-साहित्य में सबसे अधिक संख्या गीतों की है। यहां के लोक-जीवन की तरह ही यहां के लोक-गीत भी भावना प्रधान है। भाव, भाषा उपमा एवं अलंकार सभी दृष्टियों से लोकगीत अत्यन्त समृद्ध रहा है। इसमें देवी-देवता के माध्यम से भी मानव जीवन की कहानी कही गई है। चाहे सूर्य हो या ब्रह्मा-सावित्री, वे सब यहाँ मानवीय स्वरूप लेकर आते और पारिवारिक प्रतीकों के सहारे समाजिक जीवन को समृद्ध बनाने में अपना योगदान देते हैं। एक ओर यदि इनके विवाह के गीतों में कन्या की सगाई से लेकर बिदाई तक के प्रत्येक क्षण का वर्णन है तो दूसरी ओर गणगौर के गीतों में किशोर बालिका से लगाकर वयस्क ग्राम वधु होने तक की मनोभावाओं का अंकन है। निमाड़ में गणगौर गीतों को सामाजिक जीवन की मांगलिक अभिव्यक्ति कह सकते है। स्वभाव के अनुसार

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 जुलाई 2017
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

निमाड़ी के कुछ गीत स्त्री प्रवृत्ति के हैं और कुछ पुरूष प्रवृत्ति के। गणगौर, विवाह, व्रत, त्यौहार, तीर्थ तथा ऋतुओं के गीत स्त्री प्रवृत्ति के हैं और ये सब स्त्रियों द्वारा सामूहिक रूप से गाए जाते हैं।

लोकगीतों का वर्गीकरण

निमाड़ी लोकगीतों को विद्वानों ने निम्नानुसार वर्गीकृत किया है :

संस्कार-सम्बन्धी गीत - सोहर गर्भावस्था और जन्मोत्सव के लिए, यज्ञोपवीत, विवाह आदि के गीत।

लेवो-लेवो वसुदेव जी हात मंऽ कुची
खोलो ते वजीर किवाड़
चार पहर जुग जागजो हो
राणी देवकी न जायेा नंदलाल, झुले पालणो नंदलाल
झगो सिंवाडूं बाला मखमल को रे
टोपी मंऽ फून्दा लगांऊ .....
पांय मंऽ नेहूर वाजण्या हो
बाळो च लते ठुम्मुक चाल, झूले पालणो नंदलाल
सोना-रूपा का घड़ा -घड़ीया रे,
(देवकी जी) यशोदा जी पाणी खऽ जाय
जल्दी चलो न म्हारी संग की सहेली
म्हारो बाळो ते इलख्यो(बिलख्यो)जाय
झुल पालणो नंदलाल
सोन्ना रूपा का चैंडू-पाटली
कृष्ण जी खेलण जाय
दूर खेलण मति जाओ रे बालाजी
मथुरा मंऽ माम- मससाळ झूले पालणो नंदलाल ।

ऋतु- संबंधी गीत - पारिवारिक , सामाजिक और धार्मिक स्थिति पर प्रकाश डालने वाले गीत।

आई, सरद सुहाणी आई रे, आई सरद सुहाणी आई रे,
गोरी गोरी चांदणी को करी नऽ सिंगार,
ऋतुराज की राणी आई रे, आई सरद सुहाणी आई रे ....
ओढ़ी नऽ मनोहर चूॅदड़ी असमानी तारा वाळी
माथा पऽ चाॅद की दी बिन्दी इनऽ चमचम करनऽ वाली,
अमरत छलक्यो धरती पऽ जब मंद मंद मुसकाई रे । आई ....

धार्मिक गीत - देवी के गीत, जन्माष्टी के गीत, गोधन के गीत, गनगौर के गीत, तीर्थयात्रा संबंधी गीत, भजन आदि।

घोड़ा-बठी न धणियर जी आया
रनुबाई करऽ सिंगार वो चंदा
कसी भरी लाऊं जमुना को पाणी
पीयर को पेळो जड़ाव की टीकी
मेण की पाटी पड़ाड़ वा चंदा
कसी भरी लाऊं जमुना को पाणी
घर म्हारो दूर घाघर म्हारी भारी
घाटी चढ़त हऊं हारी वो चंदा
कसी भरी लाऊं जमुना को पणी
घोड़ा बठी न धणियर जी आया.....

ऐतिहासिक गीत - लोकगाथाएं

उठ रे किरसाण तू तो जाग जाग जाग
धरती माता को तू छे बेटो
तू खऽ कदी नी देऊ टोटो
समय खऽ मत करऽ तू खोटो
बाँध जल्दी अपणो रोटो
अळसई खऽ लगई दऽ आग।
उठई लऽ खेती को साज
लई लऽ धरती को राज
पैदा करी नऽ आज अनाज।
उठ रे किरसाण, तू तो जाग जाग जाग।

अन्य गीत - प्रकृति- वर्णन, भौगोलिक चित्रण, चौपाल के गीत आदि।

कुवां पाणी कसी जाऊॅ रे, नजर लगी जाये।

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 जुलाई 2017
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

नजर लगी जाय, हवा लगी जाये।
म्हारा साहेब जी का बाग घणा छे,
फुलड़ा तोड़ण कसी जाऊँ रे, नजर लगी जाये
म्हारा भरणऽ सी जाऊँ रे, नजर लगी जाये।
नजर लगी जाय, हवा लगी जाय।

जीवन विषयक गीत -

तुमनऽ तो पाळया भैया अपणा पेट जी
कई एक नका, कटि गया खेत जी
जेका कट्या खेत भैया, वो भी करऽ टेस जी
ई सरकार नऽ तो, म्हारी नी करयो बेस जी
लोग कहे रे भैया, ठीक करयो बेस जी
ई सरकार नऽ तो भैया, पाळयो सारो देस जी।1

लोकगीतों का महत्व

निमाड़ में लोक गीतों का विशेष महत्व है। लोक साहित्य में लोकगीत अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निर्वाह करते है। निमाड़ी लोकगीत भारतीय भाषाओं, उपभाषाओं, बोलियों, उपबोलियों में अपनी विशिष्ट पहचान रखते हैं। निमाड़ी लोकगीतों की धार्मिक अभिव्यक्ति सामाजिक उत्सव पर्व व्रत त्यौहार, अवसर, मेले इत्यादि के रूप में विवेचित किये गये हैं। निमाड़ी लोकगीत निमाड़ की सम्पूर्ण संस्कृति को समेटे हुए है। धार्मिक लोकगीतों में निमाड़ के समकालीन परम्परावाही समाज का रूप दृष्टिगोचर होता है। लोकगीतों का संस्कृतिक मूल्य और उसकी उपादेयता मानव मन को सहज आकर्षित करती है। लोकगीतों में मनुष्य के सुख-दुख, प्रेम अनुराग, हर्ष, उल्लास सभी दिखाई देता है।

निष्कर्ष

निमाड़ी लोकगीत निमाड़ी लोक साहित्य की आत्मा है। निमाड़ी लोकगीतों से समूचे निमाड़ की संस्कृति के दर्शन होते हैं। निमाड़ी लोकगीतो में निमाड़ की सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, आध्यात्मिक, परम्पराएं, रीति-रिवाज के सहज ही दर्शन होते हैं। लोक साहित्य में लोकगीतों का महत्वपूर्ण स्थान है। निमाड़ी लोकगीत निमाड़ की जीवन शैली को चित्रित करते हैं। निमाड़ के लोकगीत अपने आप में एक धरोधर है।

संदर्भ ग्रंथ

1 निमाड़ी और उसका साहित्य, पं. रामनारायण उपाध्याय
2 निमाड़ी लोक गीत, पं. रामनारायण उपाध्याय
3 निमाड़ी संस्कृति और साहित्य, बसन्त निरगुणे